

ज्ञानसङ्कलिनीतन्त्रम्

jñānasaṅkalinītantram

ДЖНЯНА-САНКАЛИНИ ТАНТРА

Перевод выполнен Школой Йоги Натхов в 2020 г.

कैलाशशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
पृच्छति स्म महादेवी ब्रूहि ज्ञानं महेश्वर ॥ १ ॥

kailāśaśikharāsīnaṃ devadevaṃ jagadgurum |
pṛcchati sma mahādevī brūhi jñānaṃ maheśvara || 1 ||

К восседающему на вершине [горы] Кайлас Богу богов, Учителю [всего] Мира
Обратилась Махадэви: «Поведай мне Знание, Махешвара!» (1)

देवी उवाच
कुतः सृष्टिर्भवेद् देव कथं सृष्टिर्विनश्यति।
ब्रह्मज्ञानं कथं देव सृष्टिसंहारवर्जितम् ॥ २ ॥

devī uvāca
kutaḥ sṛṣṭirbhaved deva kathaṃ sṛṣṭirvinaśyati |
brahmajñānaṃ kathaṃ deva sṛṣṭisaṃhāravajitam || 2 ||

Дэви сказала:

О Бог! Как зарождается Творение [Вселенной] и как Творение разрушается?
Каково Знание Брахмана, которое вне Творения и Разрушения? (2)

ईश्वर उवाच
अव्यक्ताच्च भवेत् सृष्टिरव्यक्ताच्च विनश्यति।
अव्यक्तं ब्रह्मणो ज्ञानं सृष्टिसंहार वर्जितम् ॥ ३ ॥

īśvara uvāca
avyaktācca bhavet sṛṣṭiravyaktācca vinaśyati |
avyaktaṃ brahmaṇo jñānaṃ sṛṣṭisaṃhāra varjitam || 3 ||

Ишвара сказал:

[Как] и непроявленное проявляется [в Творении], [так] и проявленный мир в
непроявленном исчезает.
Брахман [является тем] Непроявленным (*avyakta*), Знанием, [которое] не сотворено и
неразруσιμο. (3)

ओङ्कारादक्षरात् सर्वास्त्वेता विद्याश्चतुर्दश।
मन्त्र – पूजा – तपो – ध्यानं कर्मकर्म तथैव च ॥ ४ ॥
षडङ्गं वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रपुराणानि एता विद्याश्चतुर्दश ॥ ५ ॥

**oṅkāradakṣarāt sarvāstvetā vidyāścaturdaśa |
mantra – pūjā – tapo – dhyānaṃ karmākarma tathaiva ca || 4 ||
ṣaḍaṅgaṃ vedāścātvāro mīmāṃsā nyāyavistarāḥ |
dharmaśāstrapurāṇāni etā vidyāścaturdaśa || 5 ||**

Из неразрушимого слога Ом [происходят] все эти 14 [видов] знания:
Мантра, пуджа, тапас, карма, акарма (недеяние),
Шаданга (шесть Веданг), четыре Веды, миманса, ньяя,
Дхарма-шастры и Пураны – это 14 видий. (4, 5)

**तावद् विद्या भवेत् सर्वा यावद् ज्ञानं न जायते।
ब्रह्मज्ञानं पदं ज्ञात्वा सर्वविद्या स्थिरा भवेत् ॥ ६ ॥**

**tāvad vidyā bhavet sarvā yāvad jñānaṃ na jāyate |
brahmajñānaṃ padaṃ jñātvā sarvavidyā sthirā bhavet || 6 ||**

Хотя эти видьи представляют знания о всем многообразии Вселенной, но [все же они]
истинное Знание не превосходят.
Познав Брахма-джняну (Знание Брахмана), [человек] утверждается в полном знании
[всех видий]. (6)

**वेदशास्त्रपुराणानि सामान्यगणिका इव।
या पुनः शाम्भवी विद्या गुप्ता कुलवधूरिव ॥ ७ ॥**

**vedaśāstrapurāṇāni sāmānyagaṇikā iva |
yā punaḥ śāmbhavī vidyā guptā kulavadhūriva || 7 ||**

Веды, Шастры и Пураны подобны вульгарным проституткам,
В то время как [эта] Шамбхави-видья – сокрытая, подобно благородной девице. (7)

**देहस्थाः सर्वविद्याश्च देहस्थाः सर्वदेवताः।
देहस्थाः सर्वतीर्थानि गुरुवाक्येन लभ्यते ॥ ८ ॥**

**dehasthāḥ sarvavidyāśca dehasthāḥ sarvadevatāḥ |
dehasthāḥ sarvatīrthāni guruvākyena labhyate || 8 ||**

Все знание находится в теле, все божества пребывают в теле,
Все тиртхи (священные места) находятся в теле – [все это] постигается через
наставление Гуру. (8)

**अध्यात्मविद्या हि नृणां सौख्यमोक्षकरी भवेत्।
धर्म कर्म तथा जप्यमेतत् सर्वं निवर्तते ॥ ९ ॥**

**adhyātmavidyā hi nṛṇāṃ saukhyamokṣakarī bhavet |
dharma karma tathā japyametāt sarvaṃ nivartate || 9 ||**

Причина счастья и освобождения для человека – истинное знание Атмана,
А не дхарма, карма или произнесение мантр. (9)

**काष्ठमध्ये यथा वह्निः पुष्पे गन्धः पयोऽमृतम्।
देहमध्ये तथा देवः पुण्यपापविवर्जितः ॥ १० ॥**

**kāṣṭhamadhye yathā vahniḥ puṣpe gandhaḥ payo'mṛtam |
dehamadhye tathā devaḥ puṇyapāpavivarjitaḥ || 10 ||**

Как в дереве сокрыт огонь, как в цветке содержится аромат, как в соке находится
нектар,
Так и в теле пребывает Бог, который свободен от добродетели и греха. (10)

**इडा भगवती गङ्गा पिङ्गला यमुना नदी।
इडापिङ्गलयोर्मध्ये सुषुम्ना च सरस्वती ॥ ११ ॥**

**iḍā bhagavatī gaṅgā piṅgalā yamunā nadī |
iḍāpiṅgalayormadhye suṣumnā ca sarasvatī || 11 ||**

Ида – [это] божественная Ганга, пингала – [это] река Ямуна.
В центре между идой и пингалой [находится] сушумна и [она же есть] Сарасвати. (11)

**त्रिवेणीसंगमो यत्र तीर्थराजः स उच्यते।
तत्र स्नानं प्रकुर्वीत सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १२ ॥**

**triveṇīsaṃgamo yatra tīrtharājaḥ sa ucyate |
tatra snānaṃ prakurvīta sarvapāpaiḥ pramucyate || 12 ||**

Место слияния [этих] трех рек известно как тиртха-раджа (царь всех святых мест).
Там следует совершать омовение, чтобы очиститься от всех грехов. (12)

**देवी उवाच
कीदृशी खेचरी मुद्रा विद्या च शाम्भवी पुनः।
कीदृश्यध्यात्मविद्या च तन्मे ब्रूहि महेश्वर ॥ १३ ॥**

**devī uvāca
kīdrśī khecarī mudrā vidyā ca śāmbhavī punaḥ |
kīdrśyadhyātmavidyā ca tanme brūhi maheśvara || 13 ||**

Дэви сказала:

Каковы Кхечари-мудра и Шамбхави-видья?
Каково истинное знание Атмана? Поведай мне, Махешвара! (13)

ईश्वर उवाच

मनः स्थिरं यस्य विनावलम्बनं वायुः स्थिरो यस्य विना निरोधनम्।
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनावलोकनं सा एव मुद्रा विचरन्ती खेचरी ॥ १४ ॥

īśvara uvāca

manaḥ sthiraṃ yasya vināvalambanaṃ vāyuḥ sthīro yasya vinā nirodhanam |
dr̥ṣṭiḥ sthīrā yasya vināvalokanaṃ sā eva mudrā vicarantī khecarī || 14 ||

Ишвара сказал:

Устойчивость ума (манаса) без опоры, остановка дыхания без усилия,
Неподвижность взгляда без наблюдения – эта мудра называется Кхечари. (14)

बालस्य मूर्खस्य यथैव चेतः स्वप्नेन हीनोऽपि करोति निद्राम्।
ततो गतः पथो निरावलम्बः सा एव विद्या विचरन्ती शाम्भवी ॥ १५ ॥

**bālasya mūrkhasya yathaiva cetaḥ svapnena hīno'pi karoti nidrām |
tato gataḥ patho nirāvalambaḥ sā eva vidyā vicarantī śāmbhavī || 15 ||**

[Когда] сознание подобно [сознанию] ребенка, [или] блаженного человека, [или]
спящего без сновидений
И направлено внутрь без опоры – это называют Шамбхави-видьей. (15)

देवी उवाच

देवदेव जगन्नाथ ब्रूहि मे परमेश्वर।
दर्शनानि कथं देव भवन्ति च पृथक् पृथक् ॥ १६ ॥

devī uvāca

devadeva jagannātha brūhi me parameśvara |
darśanāni kathaṃ deva bhavanti ca pṛthak pṛthak || 16 ||

Дэви сказала:

О Бог богов, Джаяганнатха (Владыка Вселенной), расскажи мне, Парамешвара,
Какие существуют учения (пути духовного развития), о Господь, [расскажи мне] о
каждом из них в отдельности. (16)

ईश्वर उवाच

त्रिदण्डी च भवेद् भक्तो वेदाभ्यासरतः सदा।

प्रकृतिवादरताः शाक्ता बौद्धा शून्यातिवादिनः ॥ १७ ॥

īśvara uvāca

tridaṇḍī ca bhaved bhakto vedābhyāsarataḥ sadā |

prakṛtivādaratāḥ śāktā bauddhā śūnyātivādinaḥ || 17 ||

Ишвара сказал:

Триданди¹, будучи также бхактами, всегда увлечены практикой и изучением Вед. Почитатели Пракрити – [это] шакты. Буддисты следуют учению о пустоте. (17)

अतोर्ध्वं गामिनो ये वा तत्त्वज्ञा अपि तादृशाः।

सर्वं नास्तीति चार्वाका जल्पन्ति विषयाश्रिताः ॥ १८ ॥

atordhvaṃ gāmīno ye vā tattvajñā api tādrśāḥ |

sarvaṃ nāstīti cārvākā jalpanti viṣayāśritāḥ || 18 ||

Затем, идущие наивысшим [путем], знающие истину (*tattvajñā*), кем бы они ни являлись (какой бы доктрины ни придерживались).

И чарваки, ведущие дебаты (*jalpa*²) о том, что ничего не существует, [они] ищут прибежища в объектах, воспринимаемых органами чувств. (18)

उमा पृच्छति हे देव पिण्डब्रह्माण्डलक्षणम्।

पञ्चभूतं कथं देव गुणाः के पञ्चविंशतिः ॥ १९ ॥

umā pṛcchati he deva piṇḍabrahmaṇḍalakṣaṇam |

pañcabhūtaṃ kathaṃ deva guṇāḥ ke pañcaviṃśatiḥ || 19 ||

Ума спросила:

О Бог! Опиши [мне] пинду и брахманду (человеческое и космическое тело), Каковы пять элементов [и, о] Бог, [каковы] их 25 гун (качеств, проявлений). (19)

¹ Санньяси, которые постоянно носят посох, разделенный вверху на три части, что символизирует контроль речи, действий и ума.

² *Jalpa* – достаточно агрессивный и догматичный вид дискуссии, основанный на логических рассуждениях.

ईश्वर उवाच

अस्थि मांसं नखं चैव त्वङ्ग्लोमानि च पञ्चमम्।

पृथ्वी पञ्चगुणा प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भासते ॥ २० ॥

īśvara uvāca

**asthi māṃsaṃ nakhaṃ caiva tvaṅglomāni ca pañcamam |
pṛthvī pañcaguṇā proktā brahmajñānena bhāsate || 20 ||**

Ишвара сказал:

Кости, плоть, ногти, а также кожа и пятые – волосы.

Упомянутые пять гун [элемента] Земли распознаются благодаря Знанию Брахмана.
(20)

शुक्रशोणितमज्जा च मलं मूत्रं च पञ्चमम्।

अपां पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भासते ॥ २१ ॥

śukraśoṇitamajjā ca malaṃ mūtraṃ ca pañcamam |

apāṃ pañcaguṇāḥ proktā brahmajñānena bhāsate || 21 ||

Семя, кровь, пот, моча и пятая – слюна.

Названные пять гун [элемента] Воды распознаются благодаря Знанию Брахмана. (21)

निद्रा क्षुधा तृषा चैव क्लान्तिरालस्यपञ्चमम्।

तेजः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भासते ॥ २२ ॥

nidrā kṣudhā tṛṣā caiva klāntirālasypañcamam |

tejaḥ pañcaguṇāḥ proktā brahmajñānena bhāsate || 22 ||

Сон, голод, жажда, усталость и пятая – лень (праздность).

Указанные пять гун [элемента] Огня распознаются благодаря Знанию Брахмана. (22)

धारणं चालनं क्षेपं संकोचं प्रसरं तथा।

वायोः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भासते ॥ २३ ॥

dhāraṇaṃ cālanaṃ kṣepaṃ saṅkocaṃ prasaraṃ tathā |

vāyoḥ pañcaguṇāḥ proktā brahmajñānena bhāsate || 23 ||

Удержание, движение, подбрасывание, сжатие и пятое – расширение.

Указанные пять гун [элемента] Воздуха распознаются благодаря Знанию Брахмана.
(23)

कामं क्रोधं तथा मोहं लज्जा लोभञ्च पञ्चमम्।

नभः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भासते ॥ २४ ॥

**kāmaṃ krodhaṃ tathā mohaṃ lajjā lobhañca pañcamam |
nabhaḥ pañcaguṇāḥ proktā brahmajñānena bhāsate || 24 ||**

Желание, гнев, а также заблуждение, стыд и пятая – жадность.
Названные пять гун [элемента] Пространства распознаются благодаря Знанию
Брахмана. (24)

आकाशाज्जायते वायुर्वायोरुत्पद्यते रविः।

रवेरुत्पद्यते तोयं तोयादुत्पद्यते मही ॥ २५ ॥

**ākāśājāyate vāyurvāyorutpadyate raviḥ |
raverutpadyate toyam toyādutpadyate mahī || 25 ||**

[Таттва, или элемент] Воздуха рождается из [таттвы] Пространства, из [таттвы] Воздуха
появляется [таттва] Солнца (Огня).
Из [таттвы] Солнца происходит [таттва] Воды, из [таттвы] Воды появляется [таттва]
Земли. (25)

मही विलीयते तोये तोयं विलीयते रवौ।

रविर्विलीयते वायौ वायुर्विलीयते तु खे ॥ २६ ॥

**mahī vilīyate toye toyam vilīyate ravau |
ravirvilīyate vāyau vāyurvilīyate tu khe || 26 ||**

[Таттва] Земли растворяется в [таттве] Воды, [таттва] Воды поглощается [таттвой]
Солнца,
[таттва] Солнца растворяется в [таттве] Воздуха и [таттва] Воздуха растворяется в
[таттве] Пространства. (26)

पञ्चतत्त्वाद् भवेत् सृष्टिस्तत्त्वात् तत्त्वे विलीयते।

पञ्चतत्त्वात् परं तत्त्वं तत्त्वातीतं निरञ्जनम् ॥ २७ ॥

**pañcatattvād bhavet sṛṣṭistattvāt tattve vilīyate |
pañcatattvāt param tattvaṃ tattvātītaṃ nirañjanam || 27 ||**

Из пяти таттв происходит творение [мира] и в таттвах [последовательно] оно
растворяется.
Высшая реальность за пределами пяти таттвам и совершенно чиста (*nirañjana*). (27)

स्पर्शनं रसनं चैव घ्राणं चक्षुश्च श्रोत्रकम्।
पञ्चेन्द्रियमिदं तत्त्वं मनः साधकमिन्द्रियम् ॥ २८ ॥

**sparśanaṃ rasaṇaṃ caiva ghrāṇaṃ cakṣuśca śrotrakam |
pañcendriyamidaṃ tattvaṃ manaḥ sādhakamindriyam ॥ 28 ॥**

Осязание, вкус, а также обоняние, зрение и слух представляют собой пять индрий (органов восприятия).
Эти индрии – инструменты ума садхаки (практикующего). (28)

ब्रह्माण्डलक्षणं सर्वं देहमध्ये व्यवस्थितम्।
साकाराश्च विनश्यन्ति निराकारो न नश्यति ॥ २९ ॥

**brahmāṇḍalakṣaṇaṃ sarvaṃ dehamadhye vyavasthitam |
sākārāśca vinaśyanti nirākāro na naśyati ॥ 29 ॥**

Все качества Вселенной содержатся в теле.
Имеющее форму (*sākāra*) подлежит разрушению, бесформенное (*nirākāra*) не разрушается. (29)

निराकारं मनो यस्य निराकारसमो भवेत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन साकारं तु परित्यजेत् ॥ ३० ॥

**nirākāraṃ mano yasya nirākārasamo bhavet |
tasmāt sarvaprayatnena sākāraṃ tu parityajet ॥ 30 ॥**

Тот, чей ум сосредоточен на бесформенном, сам становится бесформенным.
Поэтому со всем старанием следует оставить то, что обладает формой. (30)

देवी उवाच
आदिनाथ मयि ब्रूहि सप्तधातुः कथं भवेत्।
आत्मा चैवान्तरात्मा च परमात्मा कथं भवेत् ॥ ३१ ॥

**devī uvāca
ādinātha mayi brūhi sapta dhātuḥ kathaṃ bhavet |
ātmā ca iva āntar ātmā ca paramātmā kathaṃ bhavet ॥ 31 ॥**

Дэви сказала:

О, Адинатха, расскажи мне о семи дхату. Что они собой представляют?
Что есть Атман? Что есть Антаратма (внутренний Атман)? Что есть Параматма (Высший Атман)? (31)

ईश्वर उवाच

शुक्रशोणितमज्जा च मेदो मांसं च पञ्चमम्।

अस्थि त्वक् चैव सप्तैते शरीरेषु व्यवस्थिताः ॥ ३२ ॥

īśvara uvāca

śukraśoṇitamajjā ca medo māṃsaṃ ca pañcamam |

asthi tvak caiva saptaite śarīreṣu vyavasthitāḥ || 32 ||

Ишвара сказал:

Семя, кровь, мозг, жир и пятая – плоть,

А также кости и кожа – вот семь [дхату], находящиеся в теле. (32)

शरीरं चैवमात्मानमन्तरात्मा मनो भवेत्।

परमात्मा भवेच्छून्यं मनो यत्र विलीयते ॥ ३३ ॥

śarīraṃ caivamātmānamantarātmā mano bhavet |

paramātmā bhavecchūnyaṃ mano yatra vilīyate || 33 ||

Тело (воплощенная душа) – это Атман. Ум – Антаратма,

А Параматма есть Пустота, в которой растворяется ум. (33)

रक्तधातुर्भवेन्माता शुक्रधातुर्भवेत् पिता।

शून्यधातुर्भवेत् प्राणो गर्भपिण्डं प्रजायते ॥ ३४ ॥

raktadhāturbhavenmātā śukradhāturbhavet pitā |

śūnyadhāturbhavet prāṇo garbhapiṇḍaṃ prajāyate ||34||

Ракта-дхату (кровь) – это мать, Шукра-дхату (семя) – отец.

Шуныя-дхату есть прана, [благодаря им] в утробе зарождается тело. (34)

देवी उवाच

कथमुत्पद्यते वाचा कथं वाचा विलीयते।

वाक्यस्य निर्णयं ब्रूहि पश्य ज्ञानमुदाहर ॥ ३५ ॥

devī uvāca

kathamutpadyate vācā katham vācā vilīyate |

vākyaśya nirṇayaṃ brūhi paśya jñānam udāhara || 35 ||

Дэви сказала:

Расскажи, как появляется и исчезает речь?
Поведай, какова природа речи, [посредством которой] обретается правильное понимание Знания? (35)

ईश्वर उवाच

**अव्यक्ताज्जायते प्राणः प्राणादुत्पद्यते मनः।
मनसोत्पद्यते वाचा मनो वाचा विलीयते ॥ ३६ ॥**

īśvara uvāca

**avyaktājjāyate prāṇaḥ prāṇādutpadyate manaḥ |
manasotpadyate vācā mano vācā vilīyate ॥ 36 ॥**

Ишвара сказал:

Из непроявленного рождается прана, из праны возникает ум,
Из ума возникает речь, в уме она растворяется. (36)

देवी उवाच

**कस्मिन् स्थाने वसेत् सूर्यः कस्मिन् स्थाने वसेच्छशी।
कस्मिन् स्थाने वसेद् वायुः कस्मिन् स्थाने वसेन्मनः ॥ ३७ ॥**

devī uvāca

**kasmin sthāne vaset sūryaḥ kasmin sthāne vasechaśī |
kasmin sthāne vased vāyuḥ kasmin sthāne vassenmanaḥ ॥ 37 ॥**

Дэви сказала:

Где место обитания Солнца? Где пребывает Луна?
Где находится вайю (прана)? И где пребывает ум? (37)

ईश्वर उवाच

**तालुमूले स्थितश्चन्द्रो नाभिमूले दिवाकरः।
सूर्याग्रे वसते वायुश्चन्द्राग्रे वसते मनः ॥ ३८ ॥**

īśvara uvāca

**tālumūle sthitaścandro nābhimūle divākaraḥ |
sūryāgre vasate vāyuścandrāgre vasate manaḥ ॥ 38 ॥**

Ишвара сказал:

Луна пребывает в основании нёба. Солнце – в основании пупка.
Выше Солнца пребывает вайю (прана), выше Луны находится ум. (38)

सूर्याग्रे वसते चित्तं चन्द्राग्रे जीवितं प्रिये ।
एतद्युक्तं महादेवि गुरुवाक्येन लभ्यते ॥ ३९ ॥

sūryāgre vasate cittam candrāgre jīvitam priye |
etadyuktaṁ mahādevi guruvākyena labhyate || 39 ||

Дорогая [Парвати], чितта (сознание) – выше Солнца, а джива – выше Луны.
О Махадэви, это знание может быть понято только через объяснение Гуру. (39)

देवी उवाच

कस्मिन् स्थाने वसेच्चक्तिः कस्मिन् स्थाने वसेच्चिवः ।
कस्मिन् स्थाने वसेत् कालो जरा केन प्रजायते ॥ ४० ॥

devī uvāca
kasmin sthāne vaseschaktiḥ kasmin sthāne vaseschivaḥ |
kasmin sthāne vaset kālo jarā kena prajāyate || 40 ||

Дэви сказала:

В каком месте может находиться Шакти, в каком месте может пребывать Шива?
Где находится время, и каким образом наступает старость? (40)

ईश्वर उवाच

पाताले वसते शक्तिर्ब्रह्माण्डे वसते शिवः ।
अन्तरिक्षे वसेत् कालो जरा तेन प्रजायते ॥ ४१ ॥

īśvara uvāca
pātāle vasate śaktirbrahmāṇḍe vasate śivaḥ |
antarikṣe vaset kālo jarā tena prajāyate || 41 ||

Ишвара сказал:

В патале пребывает Шакти, в брахманде пребывает Шива.
В антарикше (воздушном пространстве) пребывает время, и по этой причине наступает старость. (41)

देवी उवाच

आहारं काङ्क्षते कोऽसौ भुञ्जते पिबते कथम् ।
जाग्रत् स्वप्नसुषुप्तौ च को वाऽसौ प्रतिबुध्यति ॥ ४२ ॥

devī uvāca

**āhāraṃ kāṅkṣate ko'sau bhuñjate pibate katham |
jāgrat svapnasuṣuptau ca ko vā'sau pratibudhyati || 42 ||**

Дэви сказала:

Кто желает принимать пищу, каким образом он ест и пьет?
Кто переживает состояния бодрствования, сновидения и глубокого сна? (42)

ईश्वर उवाच

**आहारं काङ्क्षते प्राणो भुञ्जतेऽपि हुताशनः ।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तौ च वायुश्च प्रतिबुध्यति ॥ ४३ ॥**

īśvara uvāca

**āhāraṃ kāṅkṣate prāṇo bhuñjate'pi hutāśanaḥ |
jāgratsvapnasuṣuptau ca vāyuśca pratibudhyati || 43 ||**

Ишвара сказал:

Прана нуждается в пище, внутренний огонь ест и пьет.
Вайю (прана) переживает состояния бодрствования, сновидения и глубокого сна. (43)

देवी उवाच

**को वा करोति कर्माणि को वा लप्येत [लिप्यति] पातकैः ।
को वा करोति पापानि को वा पापैः प्रमुच्यते ॥ ४४ ॥**

devī uvāca

**ko vā karoti karmāṇi ko vā lapyeta pātakaiḥ |
ko vā karoti pāpāni ko vā pāpaiḥ pramucyate || 44 ||**

Дэви сказала:

Кто совершает деяния (карму), кто загрязняется грехами?
Кто совершает злодеяния, и как он может быть свободным от грехов? (44)

शिव उवाच

**मनः करोति पापानि मनो लिप्यते पातकैः ।
मनश्च तन्मना भूत्वा न पुण्यैर्न च पातकैः ॥ ४५ ॥**

śiva uvāca

**manaḥ karoti pāpāni mano lipyate pātakaiḥ |
manaśca tanmanā bhūtvā na puṇyairna ca pātakaiḥ || 45 ||**

Шива сказал:

Ум совершает грехи, ум загрязняется в соответствии с дурными действиями.
[Когда] ум поглощен [высшим состоянием], нет ни греха, ни добродетели. (45)

देवी उवाच

जीवः केन प्रकारेण शिवो भवति कस्य च ।

कार्यस्य कारणं ब्रूहि कथं किञ्च प्रसादनम् ॥ ४६ ॥

devī uvāca

jīvaḥ kena prakāreṇa śivo bhavati kasya ca |

kāryasya kāraṇaṃ brūhi kathaṃ kiñca prasādanam || 46 ||

Дэви сказала:

Каким образом джива становится Шивой?
Скажи, что есть причина действия и его результат? (46)

शिव उवाच

भ्रान्तिबद्धो भवेज्जीवो भ्रान्तिमुक्तः सदाशिवः ।

कार्यं हि कारणं त्वञ्च पूर्णबोधो विशिष्यते ॥ ४७ ॥

śiva uvāca

bhrāntibaddho bhvejīvo bhrāntimuktaḥ sadāśivaḥ |

kāryaṃ hi kāraṇaṃ tvañca purnabodho viśiṣyate || 47 ||

Шива сказал:

Джива охвачена сомнениями. [Когда она] свободна от омрачений – становится Садашивой.

Ты и есть причина [действия] и [его] результат. [Это] различение и есть полное пробуждение. (47)

मनोऽन्यत्र शिवोऽन्यत्र शक्तिरन्यत्र मारुतः ।

इदं तीर्थमिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसा जनाः ॥ ४८ ॥

mano'nyatra śivo'nyatra śaktiranyatra mārutaḥ |

idaṃ tīrthamidaṃ tīrthaṃ bhramanti tāmasā janāḥ || 48 ||

Люди, находящиеся в невежестве, странствуют от одного священного места к другому,
[думая, что]

Ум находится в одном месте, Шива – в другом, Шакти, или дыхание (жизненный ветер),
– еще где-то. (48)

आत्मतीर्थं न जानाति कथं मोक्षो वरानने ॥ ४९ ॥

ātmatīrthaṃ na jānāti kathaṃ mokṣo varānane ॥ 49 ॥

О Прекрасноликая, священное место – Атман. Не зная [этого], как можно [достичь] освобождения? (49)

न वेदं वेदमित्याहुर्वेदो ब्रह्म सनातनम् ।

ब्रह्मविद्यारतो यस्तु स विप्रो वेदपारगः ॥ ५० ॥

**na vedaṃ vedamityāhurvedo brahma sanātanam |
brahmavidyārato yastu sa vipro vedapāragah ॥ 50 ॥**

Сказано: не Веды являются Знанием. Знание – это Вечный Брахман. Тот, кто наслаждается Брахма-джняной, – мудрец, истинно знающий Веды. (50)

मथित्वा चतुरो वेदान् सर्वशास्त्राणि चैव हि ।

सारं तु योगिभिः पीतं तक्रं पिबन्ति पण्डिताः ॥ ५१ ॥

**mathitvā caturo vedān sarvaśāstrāṇi caiva hi |
sāraṃ tu yogibhiḥ pītaṃ takraṃ pibanti paṇḍitāḥ ॥ 51 ॥**

Пахтанием четырех Вед и всех Шастр Извлекается истинная суть [знаний] (масло или сливки), [которым] наслаждаются йоги. Пандиты [же] довольствуются пахтой (тем, что остается после получения масла). (51)

उच्चीष्टं सर्वशास्त्राणि सर्वा विद्या मुखे मुखे ।

नोच्चीष्टं ब्रह्मणो ज्ञानमव्यक्तं चेतनामयम् ॥ ५२ ॥

**ucchīṣṭaṃ sarvaśāstrāṇi sarvā vidyā mukhe mukhe |
nocchīṣṭaṃ brahmaṇo jñānamavyaktaṃ cetanāmayam ॥ 52 ॥**

Все Шастры и все видьи [подобны] остаткам пищи во рту (объедкам). Иное (не объедки) – Знание Брахмана, непроявленное, [являющее собой] полноту осознания. (52)

न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम् ।

ऊर्ध्वरेता भवेद् यस्तु स देवो न तु मानुषः ॥ ५३ ॥

**na tapastapa ityāhurbrahmacaryaṃ tapottamam |
ūrdhvaretā bhaved yastu sa devo na tu mānuṣah ॥ 53 ॥**

Сказано, что тапас – [это] не [только] аскеза. Брахмачарья (следование Брахману) является высшим тапасом.

Тот, кто стал урдхваретой (поднявшим и сохраняющим бинду вверху, в сфере сознания), не является [более] обычным человеком и достигает божественности. (53)

न ध्यानं ध्यानमित्याहुर्ध्यानं शून्यगतं मनः ।

तस्य ध्यानप्रसादेन सौख्यं मोक्षं न संशयः ॥ ५४ ॥

**na dhyānaṃ dhyānamityāhurdhyānaṃ śūnyagataṃ manaḥ |
tasya dhyānaprasādena saukhyaṃ mokṣaṃ na saṃśayaḥ || 54 ||**

Сказано, что дхьяна – не [просто] медитация. [Суть] дхьяны – пустота, в которой исчезает ум.

Такая дхьяна дарует блаженство и освобождение, без сомнений. (54)

न होमं होममित्याहुः समाधौ तत्तु भूयते ।

ब्रह्माग्नौ हूयते प्राणं होमकर्म तदुच्यते ॥ ५५ ॥

**na homaṃ homamityāhuḥ samādhau tattu bhūyate |
brahmāgnau hūyate prāṇaṃ homakarma taducyate || 55 ||**

Сказано, что хома – [это] не [только] огненное жертвоприношение. Истинная [хома] совершается в самадхи.

Говорится, что хома – это процесс жертвования праны в огонь Брахмы. (55)

पापकर्म भवेद् भव्यं पुण्यं चैव प्रवर्तते ।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन ताद्रूप्यं च त्यजेद् बुधः ॥ ५६ ॥

**pāpakarma bhaved bhavyaṃ puṇyaṃ caiva pravartate |
tasmāt sarvaprayatnena tādrūpyaṃ ca tyajed budhaḥ || 56 ||**

Хорошие и дурные действия вызывают хорошие и дурные последствия. Поэтому мудрый человек всеми силами избегает и того, и другого. (56)

यावद् वर्णं कुलं सर्वं तावज्ज्ञानं न जायते ।

ब्रह्मज्ञानपदं ज्ञात्वा सर्ववर्णविवर्जितः ॥ ५७ ॥

**yāvad varṇaṃ kulaṃ sarvaṃ tāvajjñānaṃ na jāyate |
brahmajñānapadaṃ jñātvā sarvavarṇavivarjitaḥ || 57 ||**

Как варна, так и семья – никогда не даруют знание.
Познав источник Брахма-джняны, [человек] выходит за пределы всех варн. (57)

देवी उवाच

यत्तया कथितं ज्ञानं नाहं जानामि शङ्कर ।
निश्चयं ब्रूहि देवेश मनो यत्र विलीयते ॥ ५८ ॥

devī uvāca

yattvayā kathitaṃ jñānaṃ nāhaṃ jānāmi śaṅkara |
niścayaṃ brūhi deveśa mano yatra vilīyate || 58 ||

Дэви сказала:

Твой рассказ о Знании я не понимаю, о Шанкара.
Расскажи мне ясно, о Владыка богов, как растворяется ум. (58)

शंकर उवाच

मनो वाक्यं तथा कर्म तृतीयं यत्र लीयते ।
विना स्वप्नं यथा निद्रा ब्रह्मज्ञानं तदुच्यते ॥ ५९ ॥

śaṅkara uvāca

mano vākyaṃ tathā karma tṛtīyaṃ yatra līyate |
vinā svapne yathā nidrā brahmajñānaṃ taducyate || 59 ||

Шанкара сказал:

Брахма-джняна подобна сну без сновидений,
Когда исчезают ум, речь и третье – действие. (59)

एकाकी निस्पृहः शान्तश्चिन्ताविवर्जितः ।

बालभावस्तथा भावो ब्रह्मज्ञानं तदुच्यते ॥ ६० ॥

ekākī nispr̥haḥ śāntaścintāvivarjitaḥ |

bālabhāvastathā bhāvo brahmajñānaṃ taducyate || 60 ||

Уединение, свобода от желаний, безмятежность (умиротворение), безмыслие,
[Чистое] состояние ребенка – таково состояние Брахма-джняны. Так сказано. (60)

श्लोकार्धं तु प्रवक्ष्यामि यदुक्तं तत्त्वदर्शिभिः ।

सर्वचिन्तापरित्यागो निश्चिन्तो योग उच्यते ॥ ६१ ॥

**ślokārdhaṃ tu pravakṣyāmi yaduktam tattvadarśibhiḥ |
sarvacintāparityāgo niścinto yoga ucyate || 61 ||**

Далее я поведаю [Знание,] изреченное теми, кто познал истинную природу [реальности].
Йога – [это] уход от всех мыслей и беспокойств [и пребывание] в безмыслии. (61)

**निमिषं निमिषार्धं वा समाधिमधिगच्छति ।
शतजन्मार्जितं पापं तत्क्षणात् देवि नश्यति ॥ ६२ ॥**

**nimiṣaṃ nimiṣārdhaṃ vā samādhimadhigacchati |
śatajanmārjitaṃ pāpaṃ tatkṣaṇāt devi naśyati || 62 ||**

[Тот, кто] достигает самадхи на мгновение или [даже] долю мгновения,
О Дэви, мгновенно уничтожает грехи, накопленные за сотню рождений. (62)

**देवी उवाच
कस्य नाम भवेच्चक्तिः कस्य नाम भवेच्चिवः ।
एतन्मे ब्रूहि भो देव पश्चाज्ज्ञानं प्रकाशय ॥ ६३ ॥**

**devī uvāca
kasya nāma bhavecchaktiḥ kasya nāma bhavecchivaḥ |
etanme brūhi bho deva paścājjñānaṃ prakāśaya || 63 ||**

Дэви сказала:

Кого надлежит называть «Шакти»? Кого надлежит называть «Шива»?
Это мне, о Бог, поведай! Знание яви отныне. (63)

**ईश्वर उवाच
चलच्चित्ते वसेच्चक्तिः स्थिरचित्ते वसेच्चिवः ।
स्थिरचित्तो भवेद्देवि स देहस्थोऽपि सिध्यति ॥ ६४ ॥**

**īśvara uvāca
calaccitte vaseschaktiḥ sthiracitte vaseschivaḥ |
sthiracitto bhaveddevi sa dehastho'pi sidhyati || 64 ||**

В колеблющемся уме пребывает Шакти, в неподвижном уме пребывает Шива.
Если ум спокоен (недвижим), Дэви, [тогда] даже тот, кто находится в теле (при жизни),
обретает совершенство. (64)

देवी उवाच

कस्मिन् स्थाने त्रिधा शक्तिः षट्चक्रं च तथैव च ।

एकविंशतिब्रह्माण्डं सप्तपातालमेव च ॥ ६५ ॥

devī uvāca

**kasmin sthāne tridhā śaktiḥ ṣaṭcakraṃ ca tathaiva ca |
ekaviṃśatibrahmāṇḍaṃ saptapātālemeva ca || 65 ||**

Дэви сказала:

В каких местах [находятся] три Шакти и шесть чакр,
Так же, как и 21 брахманда (мир) и семь патал? (65)

ऊर्ध्वशक्तिर्भवेत् कण्ठः अधः शक्तिर्भवेत् गुदः ।

मध्यशक्तिर्भवेन्नाभिः शक्त्यतीतं निरञ्जनम् ॥ ६६ ॥

īśvara uvāca

**ūrdhvaśaktirbhavet kaṅṭhaḥ adhaśaktirbhavet gudaḥ |
madhyaśaktirbhavennābhiḥ śaktyatītaṃ nirañjanam || 66 ||**

Ишвара сказал:

Верхняя Шакти находится в горле, нижняя Шакти находится в заднем проходе,
Срединная Шакти находится в пупке, Незапятнанное [Высшее Бытие] превосходит
Шакти. (66)

आधारं गुह्यचक्रं तु स्वाधिष्ठानं च लिङ्गकम् ।

चक्रभेदं मयाख्यातं चक्रातीतं नमो नमः ॥ ६७ ॥

ādhāraṃ guhyacakraṃ tu svādhiṣṭhānaṃ ca liṅgakam |

cakrabhedaṃ mayākhyātaṃ cakrātītaṃ namo namaḥ || 67 ||

Адхара – тайная³ чакра, свадхиштхана соотносится с половым органом.

Мною названо различие⁴ чакр. [Тому, кто] превосходит чакры, поклонение, поклонение!
(67)

कायोर्ध्वं च ब्रह्मलोकः स्वाधः पातालमेव च ।

ऊर्ध्वमूलमधःशाखं वृक्षाकारं कलेवरम् ॥ ६८ ॥

³ Тайным местом обычно называют промежность. Адхара – это муладхара-чакра.

⁴ *Cakrabheda* здесь также указывает на практику “пронзания чакр”, посредством чего обретается состояние “за пределами чакр”, состояние единства Шивы и Шакти.

**kāyordhvaṃ ca brahmalokaḥ svādhaḥ pātālemeva ca |
ūrdhvamūlamadhaḥśākhaṃ vṛkṣākāraṃ kalevaram || 68 ||**

Верхняя часть тела – [это] брахмалока, а его нижняя [часть] – патала.
Тело [имеет] форму дерева с корнем вверху и ветвями внизу. (68)

देवी उवाच

शिव शंकर ईशान ब्रूहि मे परमेश्वर ।

दशवायुः कथं देव दशद्वाराणि चैव हि ॥ ६९ ॥

devī uvāca

**śiva śaṃkara īśāna brūhi me parameśvara |
daśavāyuh kathaṃ deva daśadvārāṇi caiva hi || 69 ||**

Дэви сказала:

Шива, Шанкара, Ишана! Поведай мне, Парамешвара,
Каковы десять вайю, [о] Бог, и каковы десять дверей? (69)

ईश्वर उवाच

हृदि प्राणः स्थितो वायुरपानो गुदसंस्थितः ।

समानो नाभिदेशे तु उदानः कण्ठहमाश्रितः ॥ ७० ॥

īśvara uvāca

**hṛdi prāṇaḥ sthito vāyurapāno gudasamsthitaḥ |
samāno nābhideśe tu udānaḥ kaṇṭhamāśritaḥ || 70 ||**

Ишвара сказал:

Прана находится в сердце, апана-вайю размещается в заднем проходе,
Самана – в области пупка, а удана расположена в горле. (70)

व्यानः सर्वगतो देहे सर्वागात्रेषु संस्थितः ।

नाग ऊर्ध्वगतो वायुः कूर्मस्तीर्थानि संस्थितः ॥ ७१ ॥

**vyānaḥ sarvagato dehe sarvāgātreṣu samsthitaḥ |
nāga ūrdhvagato vāyuh kūrmasīrthāni samsthitaḥ || 71 ||**

Вьяна в теле повсюду, во всех [его] членах пребывает.
Нага-вайю движется вверх, курма покоится в тиртах. (71)

कृकरः क्षोभिते चैव देवदत्तोऽपि जृम्भणे ।
धनञ्जयो नादघोषे निविशेच्चैव शाम्यति ॥ ७२ ॥

kr̥karaḥ kṣobhite caiva devadatto'pi jṛmbhaṇe |
dhanañjayo nādagoṣe niviseccaiva śāmyati || 72 ||

Криккара – в дрожании, а девадатта – в зевоте.
Дхананджая располагается в звуке и шуме, а также находится в теле во время отдыха
(и смерти). (72)

एष वायुर्निरालम्बो योगिनां योगसम्मतः ।
नवद्वारं च प्रात्यक्षं दशमं मन उच्यते ॥ ७३ ॥

eṣa vāyurnirālambo yogināṃ yogasammataḥ |
navadvāraṃ ca prātyakṣaṃ daśamaṃ mana ucyate || 73 ||

Эти вайю – безопорные (самоподдерживающиеся), [таково] утверждение йогинов.
Девять дверей⁵ ясны, десятую именуют умом. (73)

देवी उवाच
नाडीभेदं च मे ब्रूहि सर्वगात्रेषु संस्थितम् ।
शक्तिः कुण्डलिनी चैव प्रसूता दशनाडिका ॥ ७४ ॥

devī uvāca
nāḍībhedaṃ ca me brūhi sarvagātreṣu saṁsthitam |
śaktiḥ kuṇḍalinī caiva prasūtā daśanāḍikā || 74 ||

Дэви сказала:

Поведай мне о разных нади, находящихся в теле,
А также о Кундалини-шакти, проявленной как десять [главных] нади. (74)

ईश्वर उवाच
ईडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना चोर्ध्वगामिनी ।
गान्धारी हस्तिजिह्वा च प्रसवा गमनायता ॥ ७५ ॥

īśvara uvāca
īḍā ca piṅgalā caiva suṣumnā cordhvagāminī |
gāndhārī hastijihvā ca prasavā gamanāyatā || 75 ||

⁵ Девять дверей (отверстий тела) – это два глаза, два уха, две ноздри, рот, гениталии и анус. Обычно десятая дверь – это брахмарандхра, но здесь дается другой вариант, ум.

Ишвара сказал:

Ида, пингала и сушумна идут вверх.
Гандхари, хастиджихва и прасава движутся [вниз]. (75)

अलम्बुसा यशा चैव दक्षिणाङ्गे च संस्थिताः ।
कुलश्च शङ्खिनी चैव वामाङ्गे च व्यवस्थिताः ॥ ७६ ॥

alambusā yaśā caiva dakṣiṇāṅge ca saṁsthitāḥ |
kulaśca śaṅkhinī caiva vāmāṅge ca vyavasthitāḥ || 76 ||

Аламбуша и яша расположены в правой части тела.
Куху и шанкхيني – в левой части тела. (76)

एताषु दशनाडीषु नानानाडीप्रसूतिका ।
द्विसप्ततिसहस्राणि शरीरे नाडिकाः स्मृताः ॥ ७७ ॥

etāṣu daśanāḍīṣu nānānāḍīprasūtikā |
dvisaptatisahasrāṇi śarīre nāḍikāḥ smṛtāḥ || 77 ||

Эти десять нади дают рождение множеству различных нади.
Всего около 72000 нади насчитывается в теле. (77)

एता यो विन्दते देवि स योगी योगलक्षणः ।
ज्ञाननाडी भवेद्देवी योगिनां सिद्धिदायिनी ॥ ७८ ॥

etā yo vindate devī sa yogī yogalakṣaṇaḥ |
jñānanāḍī bhaveddevī yogināṁ siddhidāyinī || 78 ||

О Дэви, тот, кто приобрел [это знание], – йогин, [обладающий] йогическими качествами.
О Дэви, знание нади дарует йогинам сиддхи. (78)

देवी उवाच
भूतनाथ महादेव ब्रूहि मे परमेश्वर ।
त्रयो देवा कथं देव त्रयो भावास्त्रयो गुणाः ॥ ७९ ॥

devī uvāca
bhūtanātha mahādeva brūhi me parameśvara |
trayo devā kathaṁ deva trayo bhāvāstrayo guṇāḥ || 79 ||

Дэви сказала:

О Бхутанатха, Махадева, Парамешвара, поведай мне,
Каковы три божества, три бхавы и три гуны? (79)

ईश्वर उवाच

रजोभावस्थितो ब्रह्मा सत्त्वभावस्थितो हरिः ।

क्रोधभावस्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥ ८० ॥

īśvara uvāca

rajobhāvasthito brahmā sattvabhāvasthito hariḥ |

krodhabhāvasthito rudrastrayo devāstrayo guṇāḥ || 80 ||

Ишвара сказал:

В состоянии раджаса находится Брахман, в состоянии саттвы находится Хари,
В состоянии кродхи (гнева) находится Рудра. Это и есть три божества и три гуны. (80)

एकमूर्तिस्त्रयो देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

नानाभावं मनो यस्य तस्य मुक्तिर्न जायते ॥ ८१ ॥

ekamūrtistrayo devā brahmaviṣṇumaheśvarāḥ |

nānābhāvaṃ mano yasya tasya muktirna jāyate || 81 ||

Все три божества – Брахма, Вишну, Махешвара – являются одним.

Тот, кто думает о них, как о различающихся по сути, не достигнет освобождения. (81)

वीर्यरूपी भवेद् ब्रह्मा वायुरूपः स्थितो हरिः ।

मनोरूपः स्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥ ८२ ॥

vīryarūpī bhaved brahmā vāyurūpaḥ sthito hariḥ |

manorūpaḥ sthito rudrastrayo devāstrayo guṇāḥ || 82 ||

Брахма – это форма вирыи (силы), Хари существует в форме вайю (праны),

Рудра – в форме ума. Эти три божества есть три гуны. (82)

दयाभावस्थितो ब्रह्मा शुद्धभावस्थितो हरिः ।

अग्निभावस्थितो रुद्रस्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ॥ ८३ ॥

dayābhāvasthito brahmā śuddhabhāvasthito hariḥ |

agnibhāvasthito rudrastrayo devāstrayo guṇāḥ || 83 ||

Брахма существует в состоянии сострадания, Хари проявлен в состоянии чистоты, Рудра – в [сиянии] огня. Эти три божества есть три гуны. (83)

एकं भूतं परं ब्रह्म जगत् सर्वं चराचरम् ।
नानाभावं मनो यस्य तस्य मुक्तिर्न जायते ॥ ८४ ॥

ekam bhūtaṃ paraṃ brahma jagat sarvaṃ carācaram |
nānābhāvaṃ mano yasya tasya muktirna jāyate || 84 ||

Весь этот мир, движущийся и неподвижный, – это один истинный высший Брахман. Тот, кто думает о них (состояниях), как о различающихся по сути, не достигнет освобождения. (84)

अहं सृष्टिरहं कालोऽप्यहं ब्रह्माऽप्यहं हरिः ।
अहं रुद्रोऽप्यहं शून्यमहं व्यापी निरञ्जनम् ॥ ८५ ॥

ahaṃ sṛṣṭirahaṃ kālo'pyahaṃ brahmā'pyahaṃ hariḥ |
ahaṃ rudro'pyahaṃ śūnyamaḥaṃ vyāpī nirañjanam || 85 ||

Я – Творение. Я также – время. Я – Брахма. И также Я – это Хари.
Я – Рудра, а также Я есть шунья (пустота). Я – Вездесущий Ниранджана. (85)

अहं सर्वात्मको देवि निष्कामो गगनोपमाः ।
स्वभावनिर्मलं शान्तं स एवाहं न संशयः ॥ ८६ ॥

ahaṃ sarvātmako devi niṣkāmo gaganopamāḥ |
svabhāvanirmalaṃ śāntaṃ sa evāhaṃ na saṃśayaḥ || 86 ||

Я – душа в каждом живом существе, о Дэви, свободен от желаний и [пребывающий] в наивысшем пространстве неба (*gagana*).
Моя собственная природа – чиста и безмятежна. Это действительно есть Я, без сомнений. (86)

जितेन्द्रियो भवेत् सुरो ब्रह्मचारी सुपण्डितः ।
सत्यवादी भवेद् भक्तो दाता धीरो हितैरतः ॥ ८७ ॥

jitendriyo bhavet suro brahmacārī supaṇḍitaḥ |
satyavādī bhaved bhakto dātā dhīro hiterataḥ || 87 ||

[Тот] стал воплощенным Божеством, [кто] одержал победу над чувствами, является брахмачарьей, истинным пандитом,
Говорящим правду, преданным, милосердным, умиротворенным, погруженным в благое состояние. (87)

ब्रह्मचर्यं तपोमूलं धर्ममूला दया स्मृता ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन दयाधर्म समाश्रयेत् ॥ ८८ ॥

brahmacaryaṃ tapomūlaṃ dharmamūlā dayā smṛtā |
tasmāt sarvaprayatnena dayādharmaṃ samāśrayet || 88 ||

Брахмачарья – основа тапаса. Упомянуто, что сострадание – основа дхармы.
Поэтому, со всем усердием, следует принять прибежище в милосердной дхарме. (88)

देवी उवाच

योगेश्वर जगन्नाथ उमायाः प्राणवल्लभ ।
वेदसन्ध्या तपो ध्यानं होमकर्म कुलं कथम् ॥ ८९ ॥

devī uvāca
yogeśvara jagannātha umāyāḥ prāṇavallabha |
vedasandhyā tapo dhyānaṃ homakarma kulaṃ katham || 89 ||

Дэви сказала:

[О] Йогеш्वара, Джаганнатха, любимый Умой больше жизни,
О Ведах, сандхье, тапаса, дхьяне, хоме, о куле⁶ расскажи. (89)

ईश्वर उवाच

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
ब्रह्मज्ञानसमं पुण्यं कलां नार्हति षोडशीम् ॥ ९० ॥

īśvara uvāca
aśvamedhasahasrāṇi vājapeyaśatāni ca |
brahmajñānasamaṃ puṇyaṃ kalāṃ nārhati ṣoḍaśīm || 90 ||

Ишвара сказал:

[Совершенство] тысячи ашвамедх и сотни ваджапей⁷
Не может сравниться и с шестнадцатой долей благодати, [получаемой от] Брахма-
джняны. (90)

⁶ Кула – многогранное понятие, которое может означать как семью, род, так и все проявленное мироздание, скопление энергий и их взаимосвязь.

⁷ Vājapeya (испытание силы) – ведический ритуал традиции шраута, главной целью которого было обретение царем великой силы и власти, приобщение его к божественному источнику энергии.

सर्वदा सर्वतीर्थेषु यत् फलं लभते शुचिः ।
ब्रह्मज्ञानसमं पुण्यं कलां नार्हति षोडशीम् ॥ ९१ ॥

sarvadā sarvatīrtheṣu yat phalaṃ labhate śuciḥ |
brahmajñānasamaṃ puṇyaṃ kalāṃ nārhati ṣoḍaśīm || 91 ||

Постоянное [посещение] всех священных мест дает чистый плод,
[Но он] не может сравниться и с шестнадцатой долей благодати, [получаемой от]
Брахма-джняны. (91)

न मित्रं न च पुत्राश्च न पिता न च बान्धवाः ।
न स्वामी च गुरोस्तुल्यं यद्दृष्टं परमं पदम् ॥ ९२ ॥

na mitraṃ na ca putrāśca na pitā na ca bāndhavāḥ |
na svāmī ca gurostulyaṃ yaddr̥ṣṭaṃ paramaṃ padam || 92 ||

Ни друг, ни сын, ни отец, ни супруг, ни иной родственник –
[Никто] не может когда-либо сравниться с Гуру, раскрывающим Высшую Истину. (92)

न च विद्यागुरोस्तुल्यं न तीर्थं न च देवताः ।
गुरोस्तुल्यं न वै कोऽपि यद्दृष्टं परमं पदम् ॥ ९३ ॥

na ca vidyāgurostulyaṃ na tīrthaṃ na ca devatāḥ |
gurostulyaṃ na vai ko'pi yaddr̥ṣṭaṃ paramaṃ padam || 93 ||

Ни знание (*vidyā*) не может сравниться с Гуру, ни священные места, ни Божества
Поистине не сравнятся с Гуру, который раскрывает Высшую Истину. (93)

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्त्वा चानृणी भवेत् ॥ ९४ ॥

ekamapyakṣaraṃ yastu guruḥ śiṣye nivedayet |
pṛthivyāṃ nāsti taddravyaṃ yaddattvā cānr̥ṇī bhavet || 94 ||

Ученик, которому Гуру передал один единственный слог мантры,
На всей земле не сможет найти ничего, что могло бы возместить этот долг. (94)

यस्य कस्य न दातव्यं ब्रह्मज्ञानं सुगोपितम् ।
यस्य कस्यापि भक्तस्य सद्गुरुस्तस्य दीयते ॥ ९५ ॥

**yasya kasya na dātavyaṃ brahmajñānaṃ sugopitam |
yasya kasyāpi bhaktasya sadgurustasya dīyate || 95 ||**

Глубоко сокрытое (сокровенное) Высшее Знание не должно быть поведено любому, Оно может быть раскрыто Сатгуру только действительно преданному [ученику]. (95)

**मन्त्रं पूजां तपो ध्यानं होमं जप्यं बलिक्रियाम् ।
संन्यासं सर्वकर्माणि लौकिकानि त्यजेद् बुधः ॥ ९६ ॥**

**mantram pūjāṃ tapo dhyānaṃ homaṃ japyam balikriyām |
saṃnyāsaṃ sarvakarmāṇi laukikāni tyajed budhaḥ || 96 ||**

Мантру, пуджу, тапас, дхьяну, хому, джапу, жертвоприношения, Саньясу и всю мирскую деятельность мудрецу следует оставить. (96)

**संसर्गाद् बहवो दोषा निःसङ्गाद् बहवो गुणाः ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन यतिः सङ्गं परित्यजेत् ॥ ९७ ॥**

**saṃsargād bahavo doṣā niḥsaṅgād bahavo guṇāḥ |
tasmāt sarvaprayatnena yatiḥ saṅgaṃ parityajet || 97 ||**

Общение с другими людьми ведет к накоплению грехов. Непривязанность ведет к добродетели.
Поэтому аскету следует все усилия направить на то, чтобы оставить общение [с людьми]. (97)

**अकारः सात्त्विको ज्ञेय उकारो राजसः स्मृतः ।
मकारस्तामसः प्रोक्तस्त्रिभिः प्रकृतिरुच्यते ॥ ९८ ॥**

**akāraḥ sāttviko jñeya ukāro rājasaḥ smṛtaḥ |
makārastāmasaḥ proktastrībhiḥ prakṛtirucyate || 98 ||**

Звук А известен как саттва, звук У упомянут как раджас, Звук М означает тамас. Эти трое и есть Пракрити. (98)

**अक्षरा प्रकृतिः प्रोक्ता रक्षरः स्वयमीश्वरः ।
ईश्वरान्निर्गता सा हि प्रकृतिर्गुणबन्धना ॥ ९९ ॥**

**akṣarā prakṛtiḥ proktā rakṣaraḥ svayamīśvaraḥ |
īśvarānnirgatā sā hi prakṛtirguṇabandhanā || 99 ||**

Пракрити зовется нерушимой. Акшара (нерушимый) есть Ишвара сам по себе.
Пракрити, будучи связанная гунами, отдаляется от Ишвары. (99)

सा माया पालिनी शक्तिः सृष्टिसंहारकारिणी ।
अविद्या मोहिनी या सा शब्दरूपा यशस्विनी ॥ १०० ॥

sā māyā pālīnī śaktiḥ sṛṣṭisamhārakāriṇī |
avidyā mohinī yā sā śabdārūpā yaśasvinī || 100 ||

Она – Майя. Великолепная, проявленная в форме звука, она – энергия сохранения,
причина творения и разрушения,
Она же – неведение и иллюзия. (100)

अकारश्चैव ऋग्वेद उकारो यजुरुच्यते ।
मकारः सामवेदस्तु त्रिषु युक्तोऽप्यथर्वणः ॥ १०१ ॥

akāraścaiva ṛgveda ukāro yajurucyate |
makāraḥ sāmavedastu triṣu yukto'pyatharvaṇaḥ || 101 ||

Звук А – «Ригведа», звук У – «Яджурведа»,
Звук М – «Самаведа». Все три вместе – «Атхарваведа». (101)

ओङ्कारस्तु प्लुतो ज्ञेयस्त्रिनाद इति संज्ञितः ।
अकारस्तत्त्वथ भूर्लोक उकारो भुव उच्यते ॥ १०२ ॥
सव्यञ्जनो मकारस्तु स्वर्लोकस्तु विधीयते ।
अक्षरैस्त्रिभिरेतैश्च भवेदात्मा व्यवस्थितः ॥ १०३ ॥

oṅkāraṣṭu pluto jñeyastrināda iti saṃjñitaḥ |
akāraṣṭvatha bhūloka ukāro bhuva ucyate || 102 ||
savyañjano makāraṣṭu svarlokaṣṭu vidhīyate |
akṣaraṣṭribhīretaiśca bhavedātmā vyavasthitaḥ || 103 ||

Омкара наполнена этими тремя звуками.
Звук А – это бхур-лока, звук У – бхувар-лока,
Звук М обозначает свар-локу.
В этих трех звуках пребывает Атман. (102, 103)

अकारः पृथिवी ज्ञेया पीतवर्णेन संयुतः ।
अन्तरीक्षं उकारस्तु विद्युद्वर्णं इहोच्यते ॥ १०४ ॥

**akāraḥ pṛthivī jñeyā pītavarṇena saṃyutaḥ |
antarīkṣaṃ ukārastu vidyudvarṇa ihocyate || 104 ||**

Звук А известен как земля, связан с желтым цветом,
Звук У – это пространство, сказано, что он цвета молнии. (104)

**मकारः स्वरिति ज्ञेयः शुक्लवर्णेन संयुतः ।
ध्रुवमेकाक्षरं ब्रह्म ओं इत्येवं व्यवस्थितम् ॥ १०५ ॥**

**makāraḥ svariti jñeyaḥ śuklavarṇena saṃyutaḥ |
dhruvamekākṣaraṃ brahma oṃ ityevaṃ vyavasthitam || 105 ||**

Звук М известен как небеса (свар-лока), обозначается белым цветом.
Бесспорно, [звук] Ом – это единый вечный нерушимый Брахман, в котором [все]
существует. (105)

देवी उवाच

**स्थूलस्य लक्षणं ब्रूहि कथं मनो विलीयते ।
परमार्थं च निर्वाणं स्थूलसूक्ष्मस्य लक्षणम् ॥ १०६ ॥**

**devī uvāca
sthūlasya lakṣaṇaṃ brūhi kathaṃ mano vilīyate |
paramārthaṃ ca nirvāṇaṃ sthūlasūkṣmasya lakṣaṇam || 106 ||**

Дэви сказала:

О качествах грубого (физического) тела расскажи. Как растворяется ум?
О Параматме и нирване, о качествах грубого и тонкого тел [поведай]. (106)

इश्वर उवाच

**येन ज्ञानेन हे देवि विद्यते न च किल्बिषी ।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥ १०७ ॥**

**iśvara uvāca
yena jñānena he devi vidyate na ca kilbiṣī |
pṛthivyāpastathā tejo vāyurākāśameva ca || 107 ||**

Ишвара сказал:

Благодаря этому знанию, о, Дэви, познается [состояние] вне греха
И [за пределами пяти таттв:] Земли, Воды, Огня, Воздуха и Пространства. (107)

स्थूलरूपी स्थितोऽयं च सुक्ष्मं च अन्यथा स्थितः ॥ १०८ ॥

sthūlarūpī sthito'yaṃ ca sukṣmaṃ ca anyathā sthitaḥ ॥ 108 ॥

[Тот, кто] находится в плотном теле, он [же находится] и в тонком теле, и [он же —] за пределами обоих. (108)

स्थिरासनो भवेन्नित्यं चिन्तानिद्राविवर्जितः ।

आशु स जायते योगी नान्यथा शिवभाषितम् ॥ १०९ ॥

**sthirāsano bhavennityaṃ cintānidrāvivarjitaḥ |
āśu sa jāyate yogī nānyathā śivabhāṣitam ॥ 109 ॥**

Тот, кто постоянно пребывает в устойчивой асане, свободен от мыслей и сна,
Тот быстро становится йогом. Нет иного пути. Так сказано Шивой. (109)

य इदं पठते नित्यं शृणोति च दिने दिने ।

सर्वपापविशुद्धात्मा शिवलोकं स गच्छति ॥ ११० ॥

**ya idaṃ paṭhate nityaṃ śṛṇoti ca dine dine |
sarvapāpaviśuddhātmā śivalokaṃ sa gacchati ॥ 110 ॥**

Тот, кто постоянно читает и день за днем слушает этот [текст],
Очищается от всех пороков [и] следует в Шивалоку. (110)

इति ज्ञानसङ्कलिनीतन्त्रं समाप्तम् ॥

iti jñānasaṅkalinītantraṃ samāptam ॥

Так завершается «Джняна-Санкалини Тантра».